P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भूमण्डलीकरण और सांस्कृतिक अस्मिता

हबीब खान
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राज. बाँगड महाविद्यालय,
डीडवाना

सारांश

भूमण्डलीकरण आधुनिकता की परिणति है। सामान्यता भूमण्डलीकरण की उन प्रक्रियाओं से समझा जा सकता है जो राष्ट्र की सीमाओं से परे वैश्विक स्तर पर समुदायों, संस्थाओं को दिशा एवं काल के साथ इस तरह जोड़ने का कार्य कर रही है कि एक विश्व ग्राम हमारे अनुभव का यथार्थ बन गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने जिस वैश्विक संचार नेटवर्क को जन्म दिया है उसने विश्व की उत्पादन एवं विनिमय व्यवस्था को मजबूत किया है। इस कारण हमारे जीवन की स्थानीय परिस्थितियों की पकड़ ढीली हो गई है। प्रौद्योगिकी आर्थिक बदलाव के चलते आज दुनिया में स्थान की दूरी और समय में बदलाव इतनी तेजी से हो रहा है कि हमारे सामने उससे निपटने और सांस्कृतिक अस्मिता का संकट पैदा हो गया है। भूमण्डलीकरण व्यवस्था में राष्ट्र, संस्कृति, दलित, स्त्री और अल्पसंख्यक विमर्श उभर कर तरह–तरह के सवाल खड़ें कर रहा है।

मुख्य शब्द : गलाकाट प्रतियोगिता, नकलची संस्कृति, जन्मघूंटी, भूमण्डलीकरण की कोख, नाभिनाल सम्बन्ध, वाग्मिता, साम्प्रदायिक विमर्श, सामाजिक सरोकार, जिस्मानी खिलौना, राष्ट्रीयता का कलफ।

प्रस्तावना

भूमण्डलीकरण पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की देन है। इसके समर्थकों का प्रमुख लक्ष्य सारी दुनिया को एक ही रंग में रंगना है, यानि सभी प्रकार की विविधताओं को मिटाकर एकरूपता लाना। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो अमेरिकी संस्कृति और जीवन शैली को सारे विश्व पर लादना चाहते हैं। भूमण्डलीकरण ने जिस संस्कृति को जन्म दिया है उसमें पूँजी और उत्पादन के द्वारा यह तय किया जा रहा है कि कहाँ किस संस्कृति को बढ़ावा देना है। जब संस्कृति पर साम्राज्यवादी संस्कृति का वर्चस्व काम करने लगता है तब सांस्कृतिक अस्मिता का संकट खड़ा होता है। वैश्विक पूँजी अपने हित साधन हेतु ऐसे औजार तैयार करती है जो निजीकरण को बढ़ावा देते हैं। भारत में ग्रामीण जनसंख्या का बड़ा हिस्सा कृषि पर निर्भर है। परिवार, जाति, धर्म का मोह और दृढ़ आस्था ने भूमण्डलीकरण के प्रभाव को रोक रखा है और भारतीय मूल्यों को बचाकर रखा है। भारतीय संस्कृति विविधता के बावजूद विदेशी सत्ता के प्रति प्रतिरोध राष्ट्रीय नेताओं के प्रति सम्मान, पाकिस्तान द्वारा युद्ध छेड़ने पर और राष्ट्रीय विषयों पर एकजुट समर्थन करने की भावना जनमानस में रही है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत आलेख के निम्नलिखित लक्ष्य रखे गये हैं :–

1. भूमण्डलीकरण की अवधारणा को समझना।
2. भूमण्डलीकरण के प्रभावों की जानकारी।
3. सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक बदलाव का अध्ययन।
4. भूमण्डलीकरण के शोषितों का विवेचन ।
5. सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना।

भूमण्डलीकरण का अर्थ

भूमण्डलीकरण का अर्थ है अमेरिकीकरण। या तो आप अमेरिका जैसा बनें या अमेरिकी प्रभुत्व स्वीकार कर उसके पक्ष में खड़ें हो। अमेरिकी विदेश मंत्री हेनरी किसिंगर ने कहा, ''बुनियादी चुनौती यह है कि जिसे भूमण्डलीकरण कहा गया है वह अमेरिका का वर्चस्व जमाये रखने सम्बन्धी भूमिका का ही दूसरा नाम है। बीते दशक के दौरान अमेरिका ने अभूतपूर्व समृद्धि हासिल की है पूँजी की उपलब्धता को व्यापक और घना किया है। अमेरिका के बीते दिन कुछ इस प्रकार से अच्छे थे।'' [1]

(राष्ट्रीय सहारा, 21 सितम्बर 2003, नई दिल्ली– गिरीश मिश्र, भूमण्डलीकरण और संस्कृति)

भूमण्डलीकरण अपने ही मुल्क की जमीन पर आंतरिक उपनिवेशवाद कायम करता है। बाजारवादी अर्थव्यवस्था की फितरत ही कुछ ऐसी है कि वाणिज्य, व्यापार और लेन–देन के फीते से कामयाबी–नाकामयाबी को नापती है। लेनिन ने कहा था कि इतिहास किसी गलत सोच के मुताबिक चलने के लिए मजबूर नहीं है और जिंदगी कभी उम्मीद से खाली नहीं होती है। उत्तर आधुनिक चिंतक वहाँ पहुँचे या न पहुँचें बाजार वहाँ जायेगा जहाँ उसे नफा–फायदा होगा। पुर्तगाली उपन्यासकार सारामागु ने भूमण्डलीकरण का कितना अच्छा नक्शा खींचा है, ''भूमण्डलीकरण द्वारा एक सुनहरे विश्व की रचना के बावजूद अन्याय बढ़ रहे हैं, असमानता भीषणतर हो रही है। अज्ञान फैलता जा रहा है। विपन्नता बढ़ रही है। वही मनोविगलित लोग मंगल ग्रह पर चट्टानों के अध्ययन के लिए मशीनें भेज रहे हैं। भूख से मरने वाली लाखों की मौतों के प्रति उदासीन भाव अपनाए हुए है। सरकारें अपने कर्तव्यों का पालन इसलिए नहीं कर पा रही है क्योंकि उनको मालूम नहीं कि क्या करना चाहिए या वे करना नहीं चाहती। यह भी हो सकता है कि वे शक्तियाँ जो प्रभावी रूप से विश्व को शासित कर रही है उन्हें ऐसा करने नहीं दे रही है।'' [2] (भूमण्डलीकरण के कैदी : गिरीश मिश्र पृष्ठ 171)

भूमण्डलीकरण जिस आधुनिकता की तार्किक परिणति है वह पूँजीवादी आधुनिकता है। अतः वर्तमान में भूमण्डनीकरण विश्व पूँजीवाद का नया संस्करण है। पूँजीवाद बाजारवाद पैदा करता है। बाजार बनाने में जहां पूर्व में उपनिवेशवाद काम करता था, वर्तमान में नई तकनीक और सूचना, संचार–क्रांति अपनी भूमिका निभाता हे। आज हम जिस पूँजीवाद की तरफ बढ़ रहे हैं। वह बहुराष्ट्रीय निगमों का पूँजीवाद है जिसका विकास तकनीक क्रांति के साथ–साथ हुआ है। जिसने राष्ट्रीय विचार और सत्ता के केन्द्र को बदलने का प्रयास किया है। पूरा विश्व ही उनके मुक्त बाजार का केन्द्र है। विज्ञापन ब्रांडों के जरिये वे इच्छाओं की सृष्टि करते हैं और बाजार के जरिये उन पर कब्जा। मनुष्य उसके लिए केवल उपभोक्ता मात्र है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में एक देश–दूसरे पर परस्पर निर्भर हो जाता है। पारस्परिक निर्भरता और व्यापारिक सम्बन्धों ने आधुनिक भूमण्डलीकरण का बीजारोपण किया। प्रौद्योगिकी परिवर्तनों ने भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की है।

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया मुख्यतः विश्व बैंक, अन्तर राष्ट्रीय मुद्राकोष और विश्व व्यापार संगठन द्वारा संचालित होती है। ये तीनों संगठन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की विश्वव्यापी संरचना के माध्यम से अविकसित देशों की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित कर अधिकाधिक लाभ कमाते हैं। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया एक तरह से वर्चस्व स्थापित करने वाली प्रकिया है जिसमें शक्तिशाली के सांस्कृतिक प्रतिमानों की जमीन तैयार होती है जिससे वर्चस्वशाली संस्कृति कमजोर संस्कृति पर हावी हो सकती है।

भूमण्डलीकरण विशेष रूप से दो क्षेत्रों पर विशेष बल देता है उदारीकरण और निजीकरण। उदारीकरण का अर्थ है औद्योगिक और सेवा क्षेत्र की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित नियमों में ढील देना और विदेशी कम्पनियों को घरेलू क्षेत्र में व्यापारिक एवं उत्पादन इकाईयों लगाने हेतु प्रोत्साहित करना। निजीकरण के माध्यम से निजी क्षेत्र की कम्पनियों को उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन की अनुमति प्रदान करता हे। जिनकी अनुमति पूर्व में नहीं थी या सरकारी स्तर पर उत्पादन एवं सेवा की जाती थी। सरकारी सेवाओं की कम्पनियों को निजी क्षेत्र में बेचना भी सम्मलित है। भूमण्डलीकरण के प्रभाव से विकसित देशों में नौकरियां कम हुई है क्योंकि कई कम्पनियां उत्पादन खर्च को कम करने के लिए उत्पादन की इकाइयों को विकासशील देशों मे ले जाती है। इससे पश्चिम में बेरोजगारी सामान्य बात हो गई है।उन देशों में उत्पादन प्रक्रिया से खाद्यानों एवं अन्य निर्मित वस्तुओं के उत्पादकों को अधिक प्रभावित करता है। विकासशील देशों के लिए विकसित देशों से माल खरीदना जरूरत और अनिवार्य हो गया है। इससे वहाँ के स्थानीय उद्यागों को खतरा हो गया है।

राष्ट्रीय अस्मिता

अस्मिता का अर्थ होता है पहचान। सुधीरचन्द्र ने अस्मिता के सम्बन्ध में लिखा है, ''जाति, वर्ग, भाषा, धर्म, संस्कृति, राष्ट्र इत्यादि के आधार पर बनी अस्मिताओं के पुंज से हमारा अस्तित्व बनता है। इन अस्मितओं में हमेशा सह–अस्तित्व नहीं रहता और विभिन्न समूहों के हित परस्पर विरोधी भी हो जाते हैं। फलतः हमारे अंदर अस्मिताओं की अनेकताओं का दबाव बना रहता है। विदेशी दासता, स्वाधीनता आंदोलन, देश के विभाजन के फलस्वरूप हमारे बीच एक आदर्श विकसित हुआ जिसके अनुसार राष्ट्रीय अस्मिता न सिर्फ सर्वोपरि हो गयी बल्कि, विरोध की स्थिति में कोई भी अन्य सामग्री सामूहिक अस्मिता उसका विपर्यय मान ली गयी। राष्ट्रवाद और साम्प्रदायिकता के बीच भी ऐसा ही मानकीय भेद बना दिया गया और चूंकि साम्प्रदायिकता को जन्म से जोड़ दिया गया। धर्म भी राष्ट्रवाद का विपर्यय बन गया।'' [3]

1990 के दशक में भारतीय पटल पर हो रहे विकास क्रम का जिम्मेदार पूँजीवादी अमेरिकी नवसाम्राज्यवाद की आड़ में नवीन उपनिवेशवाद का नग्न रूप जिसका नग्न और विध्वसंक रूप ईराक युद्धों में देखा गया। वैचारिक स्तर पर भारत में पैर जमाना इसका पहला सांस्कृतिक हमला है। किस प्रकार भूमण्डलीकरण में अस्मिताएं बदल जाती है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की आड़ में मुसलमानों एवं अन्य अल्पसंख्यकों को खलनायक बताना तथा अयोध्या स्थित राम मंदिर और बाबरी मस्जिद का राजनैतिक दुरूपयोग कर हिन्दुओं को संगठित करना दूसरी कड़ी थी। सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों द्वारा भारतीय इतिहास का धर्म आधारित काल विभाजन तथा क्रमिक हिन्दुकाल के अतुल्य वैभव सम्पन्नता और समृद्धि की गौरव गाथा तथा मुस्लिम काल में इसकें विघटन की गाथा को रेखांकित करना भी इसी श्रृंखला की अन्य कड़ी थी। अफगानिस्तान ने तालिबान द्वारा बामियान स्थित विशालकाय बौद्ध प्रतिभाओं के विध्वंस पर अमेरिका की चुप्पी और अयोध्या बाबरी मस्जिद के विध्वंस के समय अनेक भारतीय पुरातत्वविदों की चुप्पी मात्र संयोग नहीं हो सकती। जब से समाजवादी व्यवस्थाएं ध्वस्त हुई पूँजीवादी व्यवस्था का प्रचार हुआ तभी से दृश्य बदलनें लगे है।

हिंसा पूँजीवाद की जन्मघूंटी में है। वह हिंसा से अपनी रक्षा ही नहीं करता, अपना अस्तित्व और विकास भी हिंसा पर आधारित है। यूरोप में उदीयमान पूँजीवाद के मानव–तस्करी और दासों के व्यापार से पूँजी संचय किया था।

राजनीति साहित्य एवं संस्कृति

उपनिवेशिक इतिहास लेखन के साम्प्रदायिक और विध्वंसात्मक रूप प्रस्तुत किये । इससे देश आज तक नहीं उभर पाया है। गौरव और ग्लानि के इस सिद्धांत को पिछली सदी की राजनैतिक खाद बीज देती रही है। और यह सिद्धान्त उस राजनीति को लाभ पहुँचता रहा है। मध्यकाल में भारत में हुए मंदिरों के ध्वंस, मुस्लिम वंश की स्थापना, हिन्दु मुस्लिम शासकों के टकराव से उपजी प्रतिक्रियाओं को तो समझा जा सकता है। परन्तु उपनिवेशकाल में उन कृत्यों, सत्यों, अर्धसत्यों और मिथकों की स्मृतियों में साम्प्रदायिक भावना से अलग नहीं लिया जा सकता है। कहीं समानता का स्मरण, कहीं स्वधर्म के गौरवमय प्रतीत के रूप में, कहीं मुस्लिम आततायियों से मिली यातनाओं की अग्रेंजों से तुलना के लिए ओर कहीं छद्म राष्ट्रवाद के पोषक के रूप में चित्रण होता है। आधुनिक भारतीय साहित्य में भी धर्म निरपेक्ष वातावरण पैदा करने के लिए पुरानी घटनाओं के अवशेषों को बार–बार खंगाला जाता है। हिन्दी साहित्य में अग्रज और राष्ट्रवाद के प्रसारक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भी इससे अछूते नहीं है। डॉ. श्यामसुंदर दास, रामधारी सिंह दिनकर, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, वृंदावन लाल वर्मा, बंकिम चन्द्र के साहित्य में हिन्दुओं के उत्थान की बात कहकर साम्प्रदायिक विमर्श खड़ा किया गया है।

''सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और फासीवाद'' लेख में अजय वर्मा पुनरूत्थानवादियों की मानसिकता की पड़ताल करते है। फासीवाद से उनके पुराने रिश्ते और फासीवाद के वैश्विक पूँजीवाद से नाभिनाल सम्बन्धों को उजागर करते हुए लिखते है, ''राष्ट्र जब एक बार फासीवादीकरण की राह पर चल पड़ता है तो उसे मजबूत बनाने में पूँजीपतियों की अहम् भूमिका होती है। इटली में फासीवाद को जन्म दिया था निम्न पूँजीपति और व्यापारी वर्ग ने मगर उसको चरम पर पहुंचाने में उच्च पूँजीपति वर्ग ने उल्लेखनीय भूमिका निभायी थी। भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सैद्धान्तिकी के उदय और विकास पर ध्यान दे तो मालूम पडेगा कि स्थितियां बहुत कुछ इटली से मिलती–जुलती है।'' [4] (आलोचना पत्रिका से उद्धृत (अंक 28) अक्टूबर 2018 (पेज 292)

भूमण्डलीकरण के परिणाम स्वरूप सामाजिक स्थिरता किस प्रकार बाधित होती है, यह गुजरात के हुए दंगों में देखा जा सकता है। अक्सर सभ्य समाज शांति से रहता हुआा इतना हिंसक कैसे हो सकता है ? इसकी जड़ स्थानीय एकता को नष्ट करने वाली भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया है। भूमण्डलीकरण में दूर के समाज पास हो जाते है। टी.वी. इन्टरनेट और कम्प्यूटर से अमेरिका मेरे नजदीक हो सकता है लेकिन पडोस की बस्ती से मेरा सम्बन्ध पहले जितना नजदीक नहीं रहा। भूमण्डलीकरण के दौर में राष्ट्र केवल काल्पनिक नक्शे पर स्थित मन को लुभाने वाली भावना बन गई है। नागपुर के हिन्दू मर जाने पर दुःख नहीं होता लेकिन कश्मीर में हिन्दू पर हमला होने पर वह दुःखी होता है। राजस्थान के मुसलमान को अपने गाँव में गरीबी मे जीवन–यापन कर रहें व्यक्ति के सुख दुःख से कोई सरोकार नहीं है वरन उत्तर प्रदेश में मुसलमानों के साथ अन्याय हो रहा है इसका उसे दुःख होता है। मीडिया और भूमण्डलीकरण के निरर्थक कागारोल ने स्थानीयता के प्रति संवेदना को भोथरा कर दिया है। नकाबपोश राष्ट्रीयता का प्रचलन बढ़ रहा है। स्वयं को छोड़ शेष समाज राष्ट्रीयता में पिछड़ रहे है ऐसा भ्रम निर्मित किया जा रहा है। गला–फाड भारत माता की जय बोलने वाले की राष्ट्रीयता साबित हो जाती है और गोलीबारी में गरीब जवानों के मारे जाने पर भावुक होकर शहादत का मंडन कर अपने दायित्त्व से मुक्त हो जाते है। हम जिसे राष्ट्रीयता मान बैठे है, वह अन्य लोगों को किनारे पर लगाने का षडयंत्र है। राष्ट्रीयता भूमण्डलीकरण की पुश्तपनाह है। राष्ट्र के कुछ समूहों की राष्ट्रीयता पर सन्देह किया जाता है। राष्ट्रीयता के अलावा भी हमारी कई अस्मिताएं होती है। केवल एक अस्मिता को आधार बनाकर राजनीति की जाये तो भविष्य अत्यधिक हिंसक हो सकता है। राजनेता अपना स्वार्थ साधने के लिए जनता की मानसिकता पर राष्ट्रीयता का कलफ लगाते रहे हैं।

भूमण्डलीकरण का प्रभाव

विश्व के विभिन्न भागों में बसे लोगों का जुड़ाव के वक्त वस्तुओं के उत्पादन और वितरण तक ही सीमित नहीं है। वे एक दूसरे की शिक्षा कला, साहित्य, लोक संस्कृति से जुडे हुए हैं, इसलिए एक दूसरे से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते है। भूमण्डलीकरण प्रक्रिया में एक दूसरे के बीच की दूरियां कम हो जाती है। उत्पादन और उपभोग प्रक्रिया ने विश्व को इतना नजदीक ला दिया है कि सांस्कृतिक संकट पैदा हो गया है।

आर्थिक प्रभाव

भूमण्डलीकरण प्रतिभा पलायन की राह हमवार करता है। जिससे गलाकाट प्रतियोगिता की शुरूआत होती है। विकसित देश इस प्रतिभा का प्रयोग अपने फायदे के लिए करता है। पूँजी, नवीनतम प्रौद्योगिकी मशीनों का प्रयोग कर कम लागत पर अधिकाधिक उत्पादन कर ज्यादा मुनाफा कमाया जाता है। जिससे कुछ ही पूँजीपतियों के हाथों में धन केन्द्रित हो जाता है और वे संसाधनों का मनमाना प्रयोग करते है। विकसित देश दूसरे देश के प्राकृतिक संसाधनों और सस्ता श्रम और वस्तुओं का अन्धाधुंध उपभोग का रास्ता खोल देता है।

राजनीतिक प्रभाव

विश्वस्तर पर देशों में खेम्मेबंदी हो जाती है। विश्व संगठन, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा व्यापरिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है। विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों की राजनीति को प्रभावित किया जाता है।

सामाजिक प्रभाव

संयुक्त परिवार के स्थान पर एकाकी परिवार का जन्म, समाराहों मे बदलाव खानपान की आदतें, रेस्तराओं की बढती संख्या और कई अन्तर्राष्ट्रीय त्योंहार भूमण्डलीकरण के प्रतीक है।

सांस्कृतिक प्रभाव

भूमण्डलीकरण की सांस्कृतिक चुनौती अलग तरह की है। औपनिवेशक संदभों में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया विदेशी सत्ता और गुलाम देश के नागरिकों के बीच सांस्कृतिक टकराव में निर्धारित होती है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया अधिक पारस्परिक आदान–प्रदान पर निर्भर है। विकसित देश विकासशील देशों में अपनी पूँजी का विनियोग लाभ प्राप्ति हेतु करता है। लेकिन बाजारवाद के चलते इस प्रक्रिया का सम्बन्ध पूरी तरह से नहीं तोड़ा जा सकता है। भूमण्डलीकरण जहां एक ओर स्थानीय संस्कृति के प्रभाव को कम कर बाजार की वस्तु की तरफ खींचता है वहीं दूसरी और सांस्कृतिक उत्पादों के व्यवसायीकरण का भी क्षेत्र बढ़ाता हैं जिससे परम्परागत ढंग से काम करने वाले कारीगर शिल्पी कलाकार को आर्थिक रूप से सम्पन्न होने का मौका मिलता है। सूचना क्रांति के कारण स्थान समय की दूरियां कम होने से सांस्कृतिक क्रियाकलापों और उत्सवों को स्थानीय सीमाओं के परे वैश्विक स्तर पर दिखाया जाना संभव हो सका है। विदेशों में जाकर बस गए भारतीयों द्वारा भी सांस्कृतिक उत्सवों मे जमकर भागीदारी से सांस्कृतिक पहचान को बल और प्रसार होता है।

भारत में आज भी जनसंख्या का बडा प्रतिशत कृषि पर निर्भर है। यद्यपि संयुक्त परिवार और परम्परागत सामुदायिक लोकाचार का लोप हो चुका है। किन्तु परिवार, जाति, धर्म अब भी बहुत मजबूत हे। जो सांस्कृतिक पहचान को दृढ़ आधार प्रदान करते हैं। बहुसंख्य जनसंख्या अपनी मूलभूत सांस्कृतिक पहचान भारतीय परम्पराओ (पारिवारिक मूल्यों, बुजुर्गों का सम्मान, उत्सव, सामारोहों और विधि–निषेधों) आदि से प्राप्त करती है। उत्तर आधुनिकता की हिमायत करने वाले भूमण्डलीकरण द्वारा किए जा रहे सांस्कृतिक परिवर्तनों में एक वैश्विक संस्कृति की आहट मान रहे हैं उनका मानना है कि वैश्विक पूँजीवाद ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। भारत में भूमण्डलीकरण के प्रभावों पर विचार के लिए इसमें ऐतिहासिक रूप से विकसित हुई विशेषताओं को ध्यान में रखना होगा। जाति आधारित भिन्नता जो स्वतंत्र जीवन जीने के लिए स्वतंत्रता प्रदान करती है लेकिन परम्पराओं के प्रति सम्मान होने से ऐतिहासिक सांस्कृतिक सभ्यता का अनुभव भी बना रहता हैं शायद इन्हीं विशेषताओं के कारण बाहरी संस्कृति से अपने सम्पर्कों में बेहद लचीलेपन का परिचय देकर आत्मसात करने की कोशिश की है।

तीसरी दुनिया के देशों में अपसंस्कृति की पहचान के मुख्य रूप से दो आधार माने जा सकते हैं। पहला वर्चस्व के कारण पराधीनता से अनुकूलन तथा दूसरा नकलची संस्कृति जो ताकतवर की अंधभक्ति में पैदा होती है। वर्चस्व और अंधभक्ति से लाये जा रहे सांस्कृतिक परिवर्तन हम संस्कृति के प्रचार के रूप में देख सकते हैं। इस प्रकार ब्राह्मणवाद के विरूद्ध बराबर दलितों के प्रतिरोध उभरते रहे हैं। ब्राहमणवाद और पश्चिमीकरण भारतीय अपसंस्कृति के दो रूप समझे जा सकते है। पहली समस्या आन्तरिक वर्चस्व के कारण और दूसरी बाहरी। बाहरी ताकत के विरूद्ध स्वदेशी आन्दोलन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आन्तरिक गतिरोधों को दर किनार कर एवं होने की भावना भारतीय संस्कृति के मजबूत स्तम्भ रहे हैं। वर्तमान में विश्व संस्कृति को राष्ट्र की सीमा में बांधकर रखना संभव नहीं है। राष्ट्रीय संप्रभुता संस्कृति विमर्श का अभिन्न अंग बन गया है। जब कोई स्वतंत्रता खो देता है तो सांस्कृतिक रूप से गुलाम हो जाता है। भूमण्डलीकरण ने जिस लोकप्रिय संस्कृति को जन्म दिया है उसमें विभिन्न संस्कृतियों के तत्त्व समाएं हुए है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि भूमण्डलीकरण संस्कृति पर अमेरीकी संस्कृति का वर्चस्व है। पूँजी और संसाधनों के विनियोग द्वारा यह संस्कृति तय करती है कि किस देश के समुदाय की सांस्कृतिक जीवन शैली को बढ़ावा दिया जाना है।

भूमण्डलीकरण के प्रभावों का विवेचन

भूमण्डलीकरण ने यह कैसी आधुनिकता का निर्माण किया है जिसमें नवाचार केवल बर्हिमुखी है, यह कैसा पाखण्ड है कि हम नुमाईश होने वाली चीजों में नएपन को अपना रहे हैं। विचारों और भावनाओं जैसी सांस्कृतिक घरोहरों को पिछडू और जाहिलियत की संज्ञा दे रहे हैं। बाजार द्वारा नियंत्रित आधुनिकता की भेड़ चाल और फैशन में फंस रहे है। भूमण्डलीकरण की कोख से निकला उपभोक्तावाद जिसका शिल्पकार है। आधुनिकता के मापदण्ड बदले जा रहें है। आज अधिसंख्य लोग बहुमत शक्ति के घमण्ड में धर्म, खानपान, रिवाज, मान्यताओं, विश्वासों से इतर जीवन जीने वालों को कुचल देने का दण्डाधिकार दिखा रहे है। तथाकथित गौ रक्षक निर्दोषों की हत्या कर रहे हैं। भारत माता की जय बोलने वाले को ही सच्चा राष्ट्रभक्त मान रहे हैं। कावड़ यात्री आतंक मचा रहे हैं। समाजवाद को मिटाने के लिए भूमण्डलीकरण को अस्त्र बनाया गया है। मार्क्स के मजदूरों की एकता के बरक्स मालिकों के भाईचारे का लुभावना चेहरा दिखाया जा रहा है। समाजवादी देशों को लौह कपाटों के समान बताया गया और संसार अब एक गाँव होगा जिसमें सब रहेंगें। एक दिन होगा जब सरहदें खत्म हो जायेगी। भूमण्डलीकरण के अगुआ देश अपनी सरहद में अपना भविष्य की हिफाजत देख रहे हैं। परेशान करने वाली बात यह है कि विकसित और विकासशील देश के नागरिक सब इसके समर्थन में खड़े हैं।

यह आक्रामक बहुसंख्यकवाद अपने से भिन्न को, बाहरी को दलित करने, बेदखल करने को राष्ट्रभक्ति की पहचान मान रहा है। उपभोक्तावाद ने ऐसी संस्कृति को जन्म दिया है जिसमें लोगों की यह सोच बनने लगी है कि जीवन का अर्थ केवल अपना भला और अधिकाधिक अपने परिवार का भला और मौज–मस्ती है। इसमें उपभोक्ता वस्तुएं बुनियादी तत्त्व है। जिसे आर्थिक सम्पन्नता से हासिल किया जाता है। यह सम्पन्नता उनकी विचारधारा में इतनी मानवोचित है कि नीति–अनीति से कोई सरोकार नहीं है। यह अमीरी का दर्शन इतना असंवेदनशील है कि अन्य हमको इस तर्क से शत्रु लगते है कि यदि यह नहीं होता तो उनकी सम्पदा हमारी मस्ती पर रंग चढ़ाने के काम आती। आर्थिक समृद्धि और तकनीकी विकास के मध्यवर्ग की जीवनशैली,

सौन्दर्यात्मकता को Åंचा किया है। अब वह मन–बेमन जैसा भी हो सुसंस्कृत दिखना चाहता है। इस आभासी समय में जो कुछ दिख रहा है वैसा है नहीं। नेता आभास कराते हैं कि जो उच्च विचार जनता के सामने रख रहे हैं। उनमें उनका हित है जब कि यह वाग्मिता का खेल रचा जा रहा है।

भूमण्डलीकरण और स्त्री

भूमण्डलीकरण के सांस्कृतिक मिजाज को इस तरह बिगाड़ दिया है कि अपनी संस्कृति की पहचान भी मुमकिन नहीं हो पा रही है। स्त्रियों की बाहरी और आन्तरिक दुनिया को प्रभावित किया है। अपने नैसर्गिक गुणों (दया, ममता, सहिष्णुता, सहनशीलता) के कारण स्त्रियों को महानता और सदाशयता की नजीर पेश की जाती है, यही गुण दकियानूस प्रतीत होने लगे हैं। आज के वैश्विक बाजार में सबसे कीमती वस्तु है स्त्रियाँ। इस कारण इस दौर में बाजार के रूप में विस्तृत हो गई है एक्सपोर्ट जोन, रेडीमेड, प्राइवेट कम्पनियों में कई काम नये विकसित हुए है। टी.वी. में प्रसारित हाने वाले धारावाहिक नायिका प्रधान है इनकी कहानी अश्लील, अवैध सम्बन्ध और अनैतिक रिश्तों पर टिकी है अपने परिवार में एक दूसरे को बर्बाद करने वाली नायिकाएँ आखिकार क्या संदेश देती है ?

भूमण्डलीकरण ने स्त्रियों को ज्वैलरी, सौन्दर्य प्रसाधन और अति आधुनिक गारमेंटस के साथ 'ब्यूटी मिथ' को पुष्ट करने वाले उत्पादन से बाजार भर गये है। जहाँ जीवन की बुनियादी जरूरतों (शिक्षा, स्वास्थ्य और सन्तुलित भोजन) को हासिल करने में ही स्त्रियों का सौन्दर्य असमय ही चूक जाता है। जहाँ अशिक्षा, अंधविश्वास, बेरोजगारी जैसी समस्याएँ उनके अस्तित्व को निगल जाने के लिए पर्याप्त है वहां सम्पूर्ण स्त्री संघर्ष को सौन्दर्य में सीमित कर देना भूमण्डलीकरण की साजिश है। सुन्दरता में मानक और सौन्दर्य प्रतियोगिताएं क्या इसी रणनीति की उपज नहीं हैं ? सौन्दर्य के मानक स्त्री समुदाय में हीन भावनाएँ भरते है।

बाजार संस्कृति और परम्परा के उपकरणों से ही स्त्री मुक्ति का भ्रामक दिलासा देने के साथ एक ओर स्त्री को बाजारू सामान में रूपान्तरित कर रहा है तो दूसरी ओर उस पर स्त्री विरोधी परम्पराओं और कर्मकाण्डों की जकड़न मजबूत कर रहा है। छठ और करवाचौथ आज मीडिया में अनायास ही नहीं छाये रहते। इनके माध्यम से बाजार देशज मानसिकता में स्थायी जगह बनाता है। विज्ञापनों की हवा पर सवार होकर उपभोक्तावाद दूर दूर तक यात्राएँ करता है। मीडिया स्वयं भूमण्डलीकृत होकर किस प्रकार सामाजिक सरोकारों से दूर होता जा रहा है। देशज संस्कृति और देशज परम्पराओं का भरपूर इस्तेमाल अपने आर्थिक लक्ष्यों हेतु कर रहा है। भूमण्डलीकरण परिदृश्य में देशज संस्कृति के डूब जाने का खतरा प्रभाखेतान को किस कदर बैचेन करता है। वे लिखती है, ''उपभोक्ता संस्कृति सम्पूर्ण रूप से क्षण भंगुरता, खण्डित, बिखराव, विभाजन, अपूर्णता, असंगतता और विछिन्नता को स्वीकारती है। यह न तो इससे परे जाने की कोशिश करती है न उनकी प्रतिकिय्रा में शाश्वत का विकल्प प्रस्तुत करने की चेष्टा करती है। बल्कि भूमण्डलीकरण सिद्धान्त तो उन्हीं टुकडों के संग तैरता है घूँट–घूँट इस विछिन्नता को पीता हुआ।'' [5]

विश्व बैंक की मान्यता है कि गरीबी देशों में पर्यटन और मनोरंजन उद्योग पर ध्यान केंन्द्रित करना चाहिए। सब जानते है कि ये उद्योग सस्ते श्रमिक और यौन शोषण पर आधारित है। सेक्सट्यूरिज्म पर्यटन उद्योग का मुख्य आकर्षण है। फिलीपीन्स औरतों के निर्यात के मामले में सबसे आगे है। नर्सो और घेरलू नौकरानियों के निर्यात का कार्यक्रम वहाँ अधिकारिक रूप से चल रहा है। जापान, पौलेंड, उक्रेन रूस भी महिला तस्करी में सक्रिय है। भूमण्डलीकृत बाजार में स्त्री एक जिस्मानी खिलौना बनकर रह गई है। 'बिम्बों ' बनने के लिए उनको हसीन और आकर्षक दुनिया के सपने दिखाये जाते है। बेहतरीन रोजगार का लालच दिया जाता है। भूमण्डलीकरण की इस तेज होती प्रक्रिया में स्त्रियों को समझना होगा कि अच्छी सूरत और शोहरत की फिक्र में अपनी सीरत और तहजीब को भुला देना मुक्ति का मार्ग नहीं है।

भूमण्डलीय पहलू एवं दलित

राष्ट्रीय समाजों में जातिगत भेदभाव के व्यवहार भूमण्डलीकरण के नाम पर हो रहा है। जैसे–जैसे इसकी तीव्रता बढेगी वैसे–वैसे राष्ट्रीय समाजों के हाशिए पर पड़ें तबको और समुदायों के खिलाफ हिंसा, दमन, शोषण और अवमानना में और बढ़ोतरी होगी। वर्चस्व और आतंक की अन्तरराष्ट्रीय संरचनाएँ जितनी ताकतवर और प्रभावी होगी स्थानीय समुदायों और क्षेत्रों की स्वायतता और सक्रियता की गुंजाइशों को उतनी ही गंभीर संकटों का सामना करना पड़ेगा। भारत के संदर्भ में दलितों और उनकी बस्तियों के लिए सबसे बड़ा सच है।

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया इस समय उफान पर है और सारी दुनिया में सरकारें उसे एक मॉडल के रूप में स्वतः स्वीकार कर रही है। तीसरी दुनिया के सरकारों की भी यह स्थिति है। भूमण्डलीकरण के सांस्कृतिक परिणामों के कारण हम सभी जगहों पर प्रभुत्व और हिंसा की वर्चस्व संरचनाओं में वृद्धि देख सकते है। इस नक्कार खाने में छोटी, कमजोरी और स्थानीय आवाजों का दब जाना रोजमर्रा की बात है। लेखक रजनी कोठारी ने दलितों की स्थिति का सही खाका खींचा है, ''वर्चस्वी संरचनाएँ हाशिए पर पडें हुए समुदायों, वर्गों, जातियों के हितों को रौंदकर ही अपना स्वार्थ साधन करती है। भूमण्डलीकरण दलित जातियों के खिलाफ न केवल वर्णाश्रम के दायरे में ब्राह्मणवादी ताकतों का समर्थन करता है। वरन दरिद्रीकरण अलगाव और अन्याय के संदर्भों में भी उन्हें कोने ने घकेलता जाता है। विश्व और विश्व व्यवस्था जितनी एकीकृत होती जायेगी, दलित सरीखे समुदायों की वंचना उतनी ही बढती चली जाएगी।'' [6]

निष्कर्ष

जब समाज में अंसतोष तीव्र होता है। वह फूट पडने की सीमाओं को छूने लगता है तो एक क्रांतिकारी चरण में रूपान्तरित नहीं हो सके इसलिए राज्य कल्याणकारी चोला पहन लेता है। जब समाजवाद से सताये लोगों ने मुक्ति का मार्ग पूँजीवादी में खोजा तब

राज्यों ने अपने यहाँ अनेक कल्याणकारी घोषणा की थी और लोगों को सामाजिक सुरक्षा का इरादा जताया था। लेकिन वास्तव में गरीबों के प्रति सदय और अमीरों के प्रति सख्त होने का स्वांग रचता है केवल अपनी लोकप्रियता और अस्तित्व रक्षा के लिए। राज्य की सरकारें जनोन्मुखी दिखाई दे रही है क्योंकि हाशिए पर पड़े समाज की तकलीफ सब्र और हद से बाहर निकल कर चीख और गुस्से में बदलने लगी है। क्या हुआ मनरेगा का और मेक इन इंडिया और उससे जुडे विकास का। ईस्ट इण्डिया कम्पनी से लेकर मेक इन इंडिया वाले रंगीन कम्पनियों वाले भारत की विकास यात्रा कहाँ तक पहुँची है। आर्थिक करतबों को केन्द्र में रखकर विकास के नारे समझने का प्रयास करें और बताये कि यह जो भूख और भोजन के बीच की दूरी हैं क्यों नही पाटी जा सकती ? निसंदेह इस विषमता के लिए भूमण्डलीकरण जिम्मेदार है।

पश्चिमी संस्कृति में सभी कुछ त्याज्य है, और हमारी संस्कृति के समस्त मूल्य पूज्य है। यह मत एक पक्षीय है। सांस्कृतिक अस्मिता का सवाल भविष्य से जुडा है। हमारी संस्कृति के जो श्रेष्ठ तत्त्व है उन्हें रखना होगा और जो जर्जर हो चुके है, उनको छोडना होगा। विदेशी संस्कृति के गतिशील मूल्यों को अपनाना होगा है। यही जीवन्त संस्कृति की पहचान है। आज जरूरत है कि विवेक के विकसित करने की, जो यह कार्य सफलतापूर्वक कर सकें। हम न तो यह मानकर कि आधुनिकता के विचारधाराओं के बीच टकराव का अंत हो गया है और इतिहास के अंत की घोषणा करने वालों के साथ जा सकते है, और न ही संस्कृति के संघर्ष की पोषण करने वालों के साथ जा सकते है जो सेकुलर पश्चिम और आधुनिक विरोधी खेमों में बंटे हुए हैं। प्रश्न चयन का है। हमें आधुनिकता के आधार पर पुनः व्याख्यायित करना है। औपनिवेशिक दासता के विरूद्ध हमारे संघर्ष ने इतनी मजबूत पृष्ठभूमि तैयार की है, जिसको भारतीय संविधान ने मूर्तरूप प्रदान किया। सांस्कृतिक अस्मिता का संरक्षण के लिए हमें आलोचनात्मक विवेक विकसित कर जीवन्त संस्कृति के आदर्श नमूना अपने सामने रखना होगा। संविधान और न्याय व्यवस्था पर विश्वास कर परम्पराओं का सम्मान करना होगा। महात्मा गांधी के स्वेदशी मंत्र को पकड़कर सांस्कृतिक अस्मिता की जमीन को उपजाऊ बनाना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. रवि श्रीवास्तव, उत्तर आधुनिकताः विभ्रम और यथार्थ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2006*
2. *सम्पादक नामवर सिंह, आलोचना पत्रिका (अंक 14) जुलाई सितम्बर 2003*
3. *सुधीर चन्द्र, हिन्दू, हिन्दुत्व हिन्दुस्तान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2003 पेज (15–16)*
4. *सम्पादक नामवर सिंह, आलोचना पत्रिका, से उद्धृत (अंक 28) अक्टूबर 2018 पृ. 292*
5. *प्रभा खेतान, भूमण्डलीकरण और स्त्री के प्रश्न, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010*
6. *अभय कुमार दुबे, आधुनिकता के आइने में दलित, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2014*